रु. १०/–

वर्ष: १० • अंक: १२ • दिसंबर २००९, युगाब्द ५११९

केशवसृष्टि समाचार

Total No. of pages : 20

Regn. No. MH/MR/Thane (W) 06/2008-09. Licence to post at Bhayandar (W) on 5th of every month. RN-72232/99

175 Years of Indian Landing in Mauritius

षष्ठीपूर्ति समारोह

श्री. चितलेजी एवम् विमलजी का अभिनंदन करते हुए मा. बापूसाहेब मोकाशीजी

रामरत्ना विद्यामंदिर वार्षिक क्रीडा समारोह

बोध-वाक्य

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं व्रतं सहचित्तमेषाम् । समानेन वो हविषा जुहोमि समानं चेतो अभिसंविशध्वम् ॥	(अथर्व वेद ६.६४.२) हे बंधुओं! हमारे विचार समान हों । हमारी सभा सबके लिए समान हो । हम सबका संकल्प एक समान हो । हम सबका चित्त एक समान भाव से भरा हो । एक विचार होकर अपने कार्य में एक मन से लगे । इसीलिए हम सबको समान मौलिक शक्ति मिली है ।

केशवसृष्टि समाचार

मासिक

वर्ष १०, अंक १२ मूल्य रु. १०/-

दिसंबर २००९ वार्षिक रु. ५०/-

संपादक : सत्यदेव बंका

कार्यकारी संपादक : जगदिश्चंद्र पाटील

संपादक मंडल : शोभाताई थिटे, विजय धुलप, भरत बोहरा, सबिता शिंदे, सुमिता बोरसे।

कार्यालय : केशवसृष्टि, उत्तन, भाईंदर, जि. ठाणे.

दूरभाष : २८४५०२४७, २८४५२८५५

यह पत्रिका मुद्रक एवं प्रकाशक सुरेश भगेरिया द्वारा केशवसृष्टि के लिए **युनिटी आर्ट ऑफसेट** ३०२, वडाला उद्योग भवन, वडाला, मुंबई - ३१ से मुद्रित और केशवसृष्टि, उत्तन, भायंदर, जि. ठाणे से प्रकाशित हुई है.

अंतरंग .....

कार्यवाह की कलम से ४

'चाणक्य' का सफल मंचन ५

केशवसृष्टि मुक्त कृषि शिक्षण संस्था ६

रा. म्हा. प्र. मासिक प्रतिवेदन ९

कि. गो. रा. वानप्रस्थाश्रम से १०

भारत के प्राचीन विद्यापीठ १३

A boy with a mission १५

सब्जी : स्वास्थ्यवर्द्धक एवं गुणकारी १६

आओ! हम बदलें वर्तमान

संपादकीय

हम वर्तमान को बदलें या ना बदलें, वर्तमान तो प्रतिक्षण बदल ही रहा है, इस क्षण जो वर्तमान है अगले ही क्षण वह भूतकाल हो जाता है। वर्तमान को बदलने का अर्थ है, वे सार्थक कार्य हम आज करें जिसका फल हमें भविष्य में निश्चित ही मिलेगा। अगर हम वर्तमान को बदलेंगे तो भविष्य में किसी २६/११ की पुनरावृत्ति नहीं होगी, फिर कभी १९६२ की तरह हमें शर्मनाक हार का सामना नहीं करना पड़ेगा, ग्लोबल वार्मिंग के चलते हमारी नदियों के लुप्त होने का खतरा नहीं होगा, पानी के लिए तीसरा महायुद्ध नहीं होगा। इस अंक में हमने श्रीलक्ष्मीनारायणजी भाला का एक गीत 'आओ हम बदले वर्तमान' प्रकाशित किया है जो हमें वर्तमान में अच्छे कार्य करने की प्रेरणा देता है।

६ नवंबर २००९ को केशवसृष्टि द्वारा आयोजित 'चाणक्य' नाटक का प्रस्तुतिकरण श्री मनोज जोशी एवं उनके सहकलाकारों द्वारा नेहरू सेंटर वरली, मुंबई में सफलतापूर्वक किया गया। इस कार्यक्रम में समाज के अग्रणी और प्रबुद्ध लोग उपस्थित थे।

पर्यावरण, हम सब की चिंता का विषय बना हुआ है। इस अंक में पर्यावरण पर संघ का एक प्रस्ताव जो अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल द्वारा राजगृह, नालंदा की बैठक में स्वीकार किया गया था, प्रकाशित कर रहे हैं। केशवसृष्टी में पर्यावरण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। केशवसृष्टी में विविध प्रकार के वृक्ष लगाये गए है जो पर्यावरण को संतुलित करते है।

१५ नवंबर को हम सबके प्रिय श्री मुकुंदजी चितले एवं श्री बिमलजी केडिया के षष्टिपूर्ती के मांगलिक अवसर पर अभिष्ट चिंतन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें श्री मुकुंदजी एव श्री बिमलजी ने भावपूर्ण शब्दों में अपने उद्गार व्यक्त किये। सभी ने उनके दीर्घ जीवन की कामना की और संघ कार्य उनके नेतृत्व में आगे बढ़ता रहे ऐसी सदिच्छा व्यक्त की। ८, ९, १० जनवरी को केशवसृष्टी में सत्यनारायण महापूजा का कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। कार्यक्रम में आप सभी का स्वागत है।

– सत्यदेव बंका

कार्यवाह की कलम से...

केशवसृष्टि मातृसंस्था अपने विषयानुसार व प्रसंगानुसार कई कार्यक्रमों का आयोजन नियमित करते रहती है। इन कार्यक्रमों का स्वरूप प्रायः Offical Prgrammes रहता है।

शुद्ध पारिवारिक दो कार्यक्रम नवंबर मास में संपन्न हुए।

केशवसृष्टि से जुड़े दाता, संरक्षक, कार्यकर्ता एवं संघ अधिकारियों का एकत्रिकरण इस हेतु नेहरू सेंटर में 'चाणक्य' नाटिका का मंचन हुआ। केशवसृष्टि के आगामी प्रकल्पों की जानकारी से अवगत होकर सभीने संतोष प्रकट किया तथा शुभाशिष दिये।

दि. १५ नवंबर के दिन मालाड में खेतान इंटरनॅशनल स्कूल में, केशवसृष्टी अध्यक्ष मा. मुकुंद चितलेजी व केशवसृष्टि के आधारवृक्ष श्री विमल केडियाजी के षष्ठ्यब्दीपूर्ती के अभिष्टचिंतन का कार्यक्रम हुआ।

मुकुंद चितलेजी एक सुप्रसिद्ध चार्टर्ड अकाऊंटंट फर्म के चालक, कई व्यावसायिक आस्थापनाओं एवं बड़ी कंपनियों के कार्यकारी मंडल के सदस्य, चार्टर्ड अकाऊंटंस की professional body के अध्यक्ष ऐसे कई उच्च पदोंपर कार्यरत है। उनकी अध्यक्षता में केशवसृष्टि निरंतर समाजाभिमुख होते जा रही है। चितले जी का शैक्षणिक, व्यावसायिक व सामाजिक जीवन उज्ज्वल है।

हम सभी अपने 'एक' घर में भाई, बेटा या पालक होते है लेकिन कई घरों का बेटा, अनगिनत लोगों के भाई, कईयों के पालक की भूमिका हमारे विमलजी निभा रहे हैं। इतनी भूमिकाएं निभा पाने के लिए उन्होंने किस हद तक सभी का विश्वास प्राप्त किया होगा? इसकी कल्पना ही कि जा सकती है।

सभी को साथ लेकर, सर्वसमावेशक, छोटे छोटे व्यक्ती के विचारों का सम्मान तथा उनकी सूचनाओं को ध्यान में रखकर कामों को गती देना कोई उनसे सिखे।

जितने वे कोमल हृदय के है उतनेही वे अपने विचारोंपर कठोर हो सकते हैं। सफल संसारिक जिम्मेदारियों के साथ लौकिक पारमार्थिक व सामाजिक जीवन का संतुलन, 'आठ से कम नहीं आठ से जादा नहीं' यह दृढनिश्चय हमारे लिये प्रेरणादायी है।

मुकुंदजी व विमलजी ध्येयवादी, समर्पित व्यक्तित्व है ही पर दोनो विशुद्ध चारित्र्य के धनी है। हमारे अंतिम ध्ययों के प्रति सभी सुपरिचित है। हमारे ध्येय पथ को आज तक अनगिनत व्यक्तियों ने दिपस्तंभ बनकर राह दिखायी है। ऐसे दो दिपस्तंभों का केशवसृष्टि परिवार की ओर से अभिष्टचिंतन के कार्यक्रम से हमने उन्हें उनके मार्गदर्शन के लिए आग्रहित किया है। उनका आशिष व मार्गदर्शन पाने का सौभाग्य हम सभी निरंतर पायेंगे।

– ***डॉ. श्रीकांत सर्वगोड*** – कार्यवाह, केशवसृष्टि ■

केशवसृष्टि परिवार का स्नेहमिलन! 'चाणक्य' का सफल मंचन

गत अनेक वर्षों से भारतीय संस्कार, विज्ञान, कृषि, वनौषधी, गोसेवा, शिक्षा एवं प्रशिक्षण के विकास केशवसृष्टि में यहां कार्य हो रहा है। २०० एकड़ के विस्तीर्ण परिसर में विविध सामाजिक प्रकल्पों का सफल संचालन किया जाता है। सभी प्रकल्पों का प्रतिदिन प्रगति के साथ विस्तार हो रहा है। केशवसृष्टि की इस विकास यात्रा में संस्था द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के माध्यम से समाज का अत्यंत महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहा है। इस सफल यात्रा में अनेक दानदाता, विद्यार्थियों के अभिभावक, कर्मचारी, कार्यकर्ता, भूतपूर्व विद्यार्थी गण, सरकारी अधिकारियों एवं सभी शुभचिंतकों से सहयोग प्राप्त हुआ है। यही अपना केशवसृष्टि परिवार है।

ऐसे सभी शुभचिंतकों का समय समय पर एकत्रिकरण हो, उनका स्नेहमिलन हो और आपस में परिचय बढ़ाते हुए हम केशवसृष्टि के बढ़ते कदमों से अवगत हो ऐसी अपनी योजना रहती है।

इसी श्रृंखला में ६ नवंबर २००९ को वरली के नेहरू सेंटर में शाम ६ बजे श्री मनोज जोशी कृत **'चाणक्य'** का मंचन आयोजित किया गया था।

आर्य चाणक्य आज भी इतिहास के पृष्ठों पर सचेतन है। वह एक ऐसा स्वप्नदृष्टा था जिसने भारत को अखंड एवं सचेत, बलशाली और वैभवशाली राष्ट्र बनाने की आकांक्षा अपने मन में दृढ की थी। आज समग्र भारत वर्ष को सचेतन करने के लिए चाणक्य का स्मरण करना आवश्यक है।

कार्यक्रम के दिन शाम ६ बजे से भारी संख्या में केशवसृष्टि परिवार के सदस्यों का आगमन शुरू हुआ। इस सम्मेलन के लिए प्रख्यात विधिज्ञ श्री सतीश मानेशिंदे को प्रमुख अतिथि के रूप में आमंत्रित किया था। उनके आगमन के बाद प्रारंभ में एक संबोधन का कार्यक्रम हुआ। मंचपर केशवसृष्टि के पदाधिकारी एवम् प्रमुख अतिथि पधारे थे। केशवसृष्टि के उपाध्यक्ष सतीश सिन्नरकर ने स्वागत एवम् प्रास्ताविक करते हुए सभी पदाधिकारियों का एवम् प्रमुख अतिथि श्री मानेशिंदे का परिचय कराया। संस्था के अध्यक्ष मा. श्री. मुकुंदराव चितले के हाथों प्रमुख अतिथि का सम्मान किया गया। तथा प्रमुख अतिथि द्वारा 'चाणक्य' के दिग्दर्शक एवम् प्रमुख अभिनेता श्री. मनोज जोशी का भी सम्मान किया गया।

अपने संबोधन में श्री. मानेशिंदे ने रामरत्ना विद्या मंदिर की प्रशंसा करते हुए कहा कि 'इस प्रकार संस्कारित शिक्षा प्रदान करनेवाली पाठशालाएं बहुत कम है। ऐसे कार्य में मेरा सदैव पूरा सहयोग रहेगा।' देश के सर्वोच्च श्रेणी के वकील श्री. मानेशिंदे ने अपने शालेय जीवन की कुछ यादें भी बतायी। उनके उत्स्फूर्त भाषण के बाद अध्यक्ष श्री मुकुंदराव चितले जी ने सभा को संबोधित किया।

इसके बाद 'चाणक्य' का मंचन प्रारंभ हुआ। प्रारंभ से ही चाणक्य के सभी कलाकारों ने अपने बेजोड अभिनय से सभी प्रेक्षकों को मंत्रमुग्ध बना दिया। चाणक्य की प्रतिज्ञा, राजाओं द्वारा राष्ट्रहित की ओर हो रहा दुर्लक्ष, राजमहल की राजनीति और चाणक्य द्वारा हर प्रसंग पर प्राप्त विजय देखते हुए सारा इतिहास समक्ष साकार हुआ। देश को अखण्ड रखने की चाणक्य नीति आज भी उतनी ही आवश्यक है, यह बात इस मंचन से ध्यान में आती है। चाणक्य के प्रति आदरभाव बढ़ानेवाला यह नाट्य अद्भूत है, ऐसी प्रतिक्रिया हर प्रेक्षक के मन में उद्भूत हुई।

स्नेहमिलन का यह कार्यक्रम मा. विमल केडिया, सुरेश भगेरिया, विलास भागवत, सुरेंद्र ओभान, रवि साठे, विनित गोएंका तथा केशवसृष्टि के सभी विश्वस्तों के प्रयासों से सफल हुआ।

रा.स्व.संघ, वसई जिला
हेमंत शिविर

रा.स्व. संघ के वसई जिले का हेमंत शिविर दि. २६ दिसंबर से २८ दिसंबर २००९ को केशवसृष्टि में संपन्न हुआ। सभी आयुवर्ग के कुल २५० शिविरार्थी एवम् कार्यकर्ताओंने शिविर में सहभाग लिया।

केशवसृष्टी मुक्त कृषि शिक्षण संस्था
रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी में प्रांगण उद्यान अध्ययन कार्यशाला

दि. २८.१०.०९ बुधवार को द्वितीय वर्ष के विद्यार्थीयों को रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी प्रांगण उद्यान अध्ययन कार्यशाला के अंतर्गत श्री. विनोद मोहिते इन्होंने मार्गदर्शन किया गया। और श्री. उमेश मोरे इन्होंने Farmpond के बारे में मार्गदर्शन किया।

श्री. विनोद मोहिते रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी में प्रांगण व्यवस्थापन का काम संभालते हैं। उनके मार्गदर्शन से ही वहां का प्रांगण और हर जगह अति सुंदरता से सजाया गया है।

जमीन के उतार के अनुसार किसी भी संस्था कि उपयोगिता बढ़ाते हुए हम प्रांगण विकास कैसे करेंगे यह सोचना कितना जरूरी है यह बात अलग अलग जगह के उदाहरण तथा उन्होंने विकसित किए हुए जगहों से पहचान करवायी।

इस व्यवस्था में शोभिवंत/सजावट के लिए लगाए जानेवाले पेंड/आम के पेड इस तरह के अलग अलग पेड किस तरह लगाए जाना चाहिए इस विषय में मार्गदर्शन किया गया। रोषणाई के बारे में विशेष ध्यान रखते हुए उतार-चढाव के नुसार, पेड के आकारनुसार छोटे बड़े पेड लगाना जरूरी होता है। लॉन लगाने की पद्धती, पेडों की कटींग/ कटाई किस तरह करनी चाहिए इस विषय में जानकारी दी गई। कृषि विद्यार्थीयों को कुछ नए पेड़ पत्तों की जानकारी भी इस चर्चा के माध्यम से मिल गई।

कार्यशालाओं सिंगापूरी कॉर्फ (Coconut) केन्टीया पाम, इस तरह अलग अलग पेडों के बारे में मार्गदर्शन किया गया।

श्री. उमेश मोरे ने (Farmpond) के विषय में मार्गदर्शन करते हुए बताया कि यह तालाब की निर्मिती करने का मुख्य उद्देश इस प्रक्षेत्र की जल मात्रा में बढ़ोतरी हो ताकी टँकर का उपयोग कम से कम हो।

इस तालाब कि खासियत यह है कि पानी संग्रहण हेतु प्लास्टिक का इस्तेमाल किया गया है। बारीश से मिलनेवाले बूंद बूंद पानी का इस्तेमाल जलस्वयंपूर्तता होने के लिए हो इस उद्देश से इस तालाब का निर्माण हुआ है।

यह कार्यशाला विद्यार्थीयों के ज्ञान में वृद्धी करनेवाला साबित हुई। श्री मोहिते विद्यार्थीयों को इस विषय में प्रात्यक्षिक मार्गदर्शन देने का सुझाव भी दिया।

कुष्ठ रोग निर्मूलन जनजागृती

दि. २१.११.०९ के दिन केशवसृष्टी कृषी तंत्र विद्यालय के विद्यार्थीयों के लिए मीरा-भाईंदर महानगरपालिका के सहयोग से 'कुष्ठरोग निर्मूलन जनजागृती' यह विषय में मार्गदर्शन किया गया। मीरा-भाईंदर के मनपा की ओर से आरोग्य केंद्र के अधिकारी/ एवं कर्मचारी श्री. एम.एम. मळेकर अपने सहचारीयों के साथ इस कार्यक्रम में सहयोग दिया। कुष्ठरोग यह एक असाध्य और सांसर्गिक रोग होने के बावजूद कुछ लोगों में बिना वजह पीडित लोगों के बारे में घृणा पैदा होती है। पर ऐसे रुग्ण/पीडितों को निरीक्षणों द्वारा पहचान लेकर उपचार विधियां संबंधित आरोग्य विभागों द्वारा किए जाते हैं। इस रोग के बारे में कुछ संबंधित स्थिर चित्र दिखाएं गए, जिससे विद्यार्थीयों को इस विषय में ज्यादा जानकारी प्राप्त हुई। यह रोग सांसर्गिक होने के कारण बचाव साध्य करने के लिए 'समय पर डाक्टर कि सलाह लें। और हर महिने में एक बार अपना खून जाँच लें ऐसा मार्गदर्शन भी उपस्थित अधिकारियों ने दिया। यह रोग मायक्रोबॅक्टेरिया लेप्री इस विषाणू द्वारा शरीर के किसी भी अंग पर फैल सकता है। जिनका स्वास्थ्य ठिक नहीं रहता या जिन लोगों की इस विषाणू प्रति रोगप्रतिकारक शक्ती कम होती है। इन्हें रोग हो जाता है। यह बात सभी विद्यार्थीयों ने अपने गावों में बताने का आश्वासन दिया। वाडा, मोखाडा, तलासरी इन विभागों में रहनेवाले विद्यार्थीयों के बारे में उन्होंने ज्यादा जानकारी ली और अधिकतम मार्गदर्शन किया।

आपके अभिप्राय

आश्रम बहुत अच्छा है। सेवा भाव अवश्य हो। (ज्येष्ठ नागरिक) स्वेच्छा भाव से आये हुये हो तो अच्छा है। संख्या कम हो तो अच्छा है। संगीत का शिक्षण एवं अभ्यास हो सकता है।

अनिल ओक, अ.भा.सह शारीरिक प्रमुख

सचमुच संघ कितने महान कार्य कर रहा है, यह केशवसृष्टी प्रकल्प में आने पर महसूस होता है। यहं तो सिर्फ झांकी है। ऐसा लगता है कि केशव ने ही इस सृष्टी (केशवसृष्टी) की रचना की है। यह नयनरम्य विश्‍व बढ़ता ही रहे ऐसी आकांक्षा है।

मेनानाथ गार्ड, घाटकोपर (पश्चिम)

वानप्रस्थाश्रम के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। बहुतही अच्छा काम चल रहा है। केशवसृष्टी प्रकल्प परिसर अतिशय प्रसन्नता प्रदान करता है। यहां के सभी प्रकल्प को हमारी शुभकामनाएं।

श्री. दि. या डोंगरे, सौ. स्वाती डोंगरे

वानप्रस्थ आश्रम बहुत ही मेन्टेन्ड है। कोई पोल्युशन नहीं, अच्छा मैनेजर तथा अच्छा स्टाफ। यहां के वातावरण से तथा ट्रस्टियों के मैनेजमेंट से बहुत खुशी हुई।

मिसेस विद्या कल्यानपुर

आश्रम बहुत ही अच्छा लगा। अब महाबलेश्‍वर जाने की अपेक्षा यही आवे, ऐसा विचार हमने यहां किया।

सौ. अश्विनी राजादन्या

हमारे पिताजी को स्वर्गवासी हुए दो महीने होने को आश्रम यहां के वरिष्ठ लोगों को देखकर हमें हमारे पिताजी की याद आ गई आँखों में पानी भर आया। क्यों बच्चे अपने मां-बाप की देखभाल नहीं करते? क्या उनकी गलती सिर्फ इतनी ही है कि बच्चों को उन्हों बचपन में अनाथाश्रम में नहीं भेजा?

एक माँ-बाप चार बच्चों को संभालते हैं परंतु चार बच्चे मिलकर एक माँ बाप को नहीं संभाल पाते, इसीलिए ऐसे वृद्धाश्रम खुलते हैं। यहां पर धन्य है वह सेवा भाव सेवक जो वृद्धों की सेवा करके पूण्य कमाते है।

सौ. हिरेन लीलाधर गाडा, भायंदर (वेस्ट)

ज्ञान गंगा

विनाशे बहवो दोषा जीवन्
प्राप्नोति भद्रकम।
तस्मात् प्राणान् धरिष्यामि ध्रुवो
जीवति सगमः ॥

इस जीवन का नाश कर देने में बहुत से दोष है। जो पुरुष जीवित रहता है, वह किभी न कभी अवश्य कल्याण व भागी होता है, अतः मैं इन प्राणों को धारण किये रहूं जीवित रहने पर अभीष्ट वस्तु अथवा सुख की प्राप्ति अवश्य म्भावी है।

(श्री मद्वाल्मीकीय रामायण)

अमृतवचन

सिर्फ किताबी शिक्षा काफी नहीं है। जिससे चरित्र बनता है, मन की शक्ति बढ़ती है, आदमी खुद पैरों पर खड़ा हो सकता है, ऐसी शिक्षा मैं चाहता हूं।

- स्वामी विवेकानंद

आओ! हम बदले वर्तमान

गौरव मंडित अपना अतीत, है भविष्य भी उज्ज्वल महान,
आओ अब बदलें वर्तमान, आओ हम बदलें वर्तमान ॥धृ. ॥
पश्चिम का कलुष-प्रवाह प्रबल, संस्कृति, सूरज को ग्राम रहा,
मानव से मानव का नाता, मानवता का पथ त्याग रहा,
पशुबल उभरा, आतंक बढ़ा,
विघटित विचलित जन-मन उजड़ा,
प्यासी इस वसुधा से कह दो, हिन्दु व सुधा का करे पान।
आओ हम बदलें वर्तमान ॥
इस हिंदुसुधा के प्राशन से, मिट जाये भेद-विभेद सभी,
जितने मत उतने ही पथ हैं, हो नाम विविध पर सत्य वही,
यह विश्‍व व्यापिनी संस्कृति है,
जड़-चेतन-जीव सभी शिव हैं।
यह सत्य-धर्म जब आहत हो, जागे पुनरपि भारत महान।
आओ हम बदले वर्तमान ॥२ ॥
जागा भारत का वन-गिकि-जन, जागे ऋषि-मुनि जागे किसान
जागे श्रम-जीवी-कर्म प्रवण, जागा यौवन हो वर्धमान
जागृत कण- कण जागृत हर क्षण,
जागृत जन-नेता, धर्म प्रवण,
हम जागरणी बेला में हो, दिग्-दिग्न्त से जय-विजय-गान।
आ हम बदले वर्तमान ॥३॥
है संघ-शक्ति की चाह यही, भारत जग-जननी पद पाये.
हर जीवन सुखी निरायम हो, विज्ञान ज्ञान-रस बरसाये,
अर्जित करने इस वैभव को,
शत-शत जीवन अर्पित माँ को,
युग-परिवर्तक हम वीर व्रती, बदलेंगे अब सारा जहान।
आओ हम बदले वर्तमान ॥४ ॥

– श्री लक्ष्मीनारायण भाला 'अनिमेष'

C M Y K

13th Annual Sports Event of Ram Ratna Vidya Mandir

The 13th Annual Sports Event of Ram Ratna Vidya Mandir was conducted on 22nd November, in the school playground. The Chief Guest of the day was Shri Anil Sadanand Patil, Chairman of Maharashtra Karate Association and President of Karate Do Association of Thane Distric.

And the Guest of honor was shri Paresh Ganatra, the well known Television actor. (Baa Bahu Aur Baby) It was indeed an event worth watching when the students performed the stunts of Karate. The program included March past, Mass Yoga, Aerobics, Lezim, Combat games apart from the track events. The students' enthusiam and vitality was seen in the various events that they had performed.

Parents' races were worth watching with the participants getting a moment of their childhood back. The Chief Guest was exuberant throught and has wished to visit the school again.

The programme was a succes revealling the wonderful support that the teaching staff has extended to the sports Department throughout their parctice as well as on the sports day highlighting the spirit of team work amongst RRVM teachers.

Coloursplash - Interschool Drawing Competition

Students of Ram Ranta Vidya Mandir Participated in the Drawing Competition organized by the Times NIE Group at Oberoi Mall, Goregaon, on Wednesday, 11th Nov. 2009. The Participants were Mst. Tushar Singh and Mst. Naithik Chauhan in Senior and Mst. Shubham Tiwari in the junior categories. The students were accompanied by their Art teacher Mr. Bhaskar Chavan and the warden Mr. Kuntal Mukherjee.

The topics given were 'My India' and 'My Dream' for juniors and seniors respectively. Many schools participated and it was a tough competition. Nevertheless our students performed well and have also gaind experience of different styles of presentation.

Bhaskar Chavan, Fine Art Teachar

Children's Day Celebration

Children's Day was Celebrated with great enthusiasm by the Teachers and students of RRVM. The teachers presented a beautiful card to the students representative, i.e. the school captain which also had an equally beautiful message for the students.

It was a nostalgic moment for the teachers as they traced back to their own childhood days with the songs 'Lakdi ki Kathi' and the nursery rhymes that they had sung to amuse the students.

It was indeed a sweet gift from the teachers reflecting their love for their students.

Guru Vandan Chatra Abhinandan

On 14th November 2009, the childern and the teachers of Ram Ratna Vidya Mandir witnessed a beautiful programme of "Guru Vandan Chatra Abhinandan" Organized by "Bharat Vikas Parishad", Bhayandar Branch in the School assembly hall.

The Various members of Bharat Vikas Parishd of Bhayandar Branch, were present in the school to present this beautiful programme. The organization visits various schools and arrange such programmes so as to keep the spirit of the "Hindu Sanskriti" alive, the main motive of the organization being, to create awareness among the young childern about our age-old culture and traditional values.

One of the members of the organization conducted the programme, whereas the secretary of the organization explained about the importance of "Guru Shisya relationship narrating the incidents of Guru Dronacharya And Eklavya from the epic "The Mahabhart". Thereafter the teachers of Ram Ratna Vidya Mandir were felicitatated by the members of "Bharat Vikas Parishad", by offering them a floral bouquet.

Secondly, two students from Junior Section and two students from Senior Section were felicitated as "Best Students" with a medal and a certificated; thus bringing out the real essence of the programme "Guru Vandan Chatra Abhinandan".

Students from Junior Section were :

1. Atharva Damle - Std. VIIB, 2. Rakshit Jiwani

Students from Senior Section were :

1. Jitendra Agrawal - 12th Science, 2. Jaydev Tamrakar - 11th Science

Lastly, the Academic Head of the school Mr. Bhusan Upasni, introduced each member of the organization individully, and the programme was concluded on the sweet and partiotic note of the National Anthem.

Arati Yadav - The Department of English

C M Y K

रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी
मासिक प्रतिवेदन – नवंबर २००९

दि. ३१ अक्तूबर से ३ नवंबर को डोनी पोलो येलाम केबांग अरुणाचल प्रदेश प्रशिक्षण वर्ग

अरुणाचल प्रदेश के डोनी पोलो येलाम केबांग संस्था से २२ कार्यकर्ताओं ने (इनमें १७ पुरुष तथा ५ महिला) इस वर्ग में सहभाग लिया। यह वर्ग प्रबोधिनी के ज्ञान-नैपुम्य केंद्र में संपन्न हुआ।

इन चार दिन के प्रशिक्षण वर्ग की शुरूवात प्रबोधिनी के महानिदेशक डॉ. विनय सहस्त्रबुद्धेजीने कार्यक्रम की रूपरेखा सहभागीयों के सामने रखी, तथा सभी का स्वागत व परिचय करवाया। इस वर्ग में कुल मिलाकर १७ सत्र हुए जिसमें अरुणाचल का भौगोलिक तथा राजकीय, सामाजिक महत्त्व, यहां के उपलब्ध साधन सामग्री के साथ उद्योजकता विकास तथा सरकारी योजनाएं-महिला, बालकल्याण तथा आदिवासी विकास हॉर्टिकल्चर तथा फॉरेस्ट्री, भाषणकला, हमारा कार्य और मिडिया, व्यक्तित्व विकास की संकल्पना इस विषयों पर विनय जोशी, सुनील देवधर, योगेश उपाध्ये, अशोक कर्णिक, विवेक सिनारे, दीपक करंजीकर, विवेक अत्रे मंदार भारदे, संजय कुलकर्णी, इन महानुभवोंने मार्गदर्शन किया।

एक विशेष सांस्कृतिक संध्या का आयोजन रविवार दि. १ नोव्हेंबर को किया था, जिसमें केशवसृष्टी के कृषी विद्यालय के विद्यार्थीयों ने सहभाग लिया था, और महाराष्ट्र के सांस्कृतिक धरोहर को अतिथियों के सम्मुख पेश किया। अरुणाचल के सहभागीओं ने भी उनकी कला का प्रदर्शन किया। दि. ४ नोव्हेंबर को सभी सहभागीयों ने मुंबई की सैर की।

स्वा. सावरकर स्मृती आंतर महाविद्यालयीन वाद विवाद स्पर्धा २००९

रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी और सावरकर दर्शन प्रतिष्ठान इस दो संस्थाओं से स्वा. सावरकर स्मृती आंतर महाविद्यालयीन वाद-विवाद स्पर्धा का आयोजन दि. ७ नवंबर, २००९ को प्रबोधिनी के ज्ञान-नैपुण्य केंद्र, भायंदर, उत्तन में संपन्न हुआ।

इस स्पर्धा में महाराष्ट्र के ५ जिलों में से २८ विद्यार्थी सम्मिलित हुए थे। धुळे के झेड. बी. पाटील कॉलेज के आशिष कुटे और गोकुळ लहासे इन्होंने संघ विजेता पुरस्कार प्राप्त किया तथा पुणे विद्यापीठ संज्ञापन व वृत्तपत्रकारिता विभाग से भारत पाटील और योगेश परळे इन्होंने उपविजेता पुरस्कार प्राप्त किया। व्यक्तिगत पुरस्कार में पहले स्थानपर जी एस मेडिकल महाविद्यालय की गौरी नाईक इनको स्मृतीचिन्ह, प्रमाणपत्र, सावरकर सिनेमा की सी.डी. तथा स्वा. सावरकरजी की दो पुस्तके तथा रुपये २५०१/- प्राप्त हुआ। दुसरा स्थान संकेत जोशी, सरकारी इंजीनिअरिंग महाविद्यालय, पुणे इन्होंने प्राप्त किया इन्हें भी स्मृतीचिन्ह, प्रमाणपत्र, सावरकरजी के दो पुस्तके तथा रुपये २००१/- पुरस्कार प्राप्त किया।

तिसरे स्थान का पुरस्कार दीप काकडे साठ्ये महाविद्यालय मुंबई इन्होंने प्राप्त किया। इन्हें भी स्मृतीचिन्ह, पुस्तके, सिनेमा, सी.डी. तथा रुपया १५०१ दिया। उत्तेजनार्थ पुरस्कार झेड. बी. पाटील महाविद्यालय धुळे के आशिष कुटे इनको मिला। इस स्पर्धा का उद्घाटन दूरदर्शन की माजी निर्माती सुश्री विजया जोगळेकर-धुमाळेजीने किया तथा परिक्षक के नाते भी जिम्मेदारी निभायी। इसके साथ महाराष्ट्र टाईम्स के वरिष्ठ पत्रकार दिवाकर देशपांडे और साम मराठी वृत्त वाहिनी के सागर गोखले जी भी परिक्षक के नाते उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में सावरकर दर्शन प्रतिष्ठान के कोषाध्यक्ष तथा प्रबोधिनी के कार्यकारी निदेशक रवींद्र साठेजीने प्रास्तविक किया और सभी मान्यवरोंने दीप प्रज्वलित करके स्पर्धा का उद्घाटन किया।

पुरस्कार प्रदान समारोह ग्रंथाली के श्री. दिनकर गांगलजी के हाथों हुआ तभी प्रबोधिनी के महानिदेशक डॉ. उपस्थित थे और सावरकर दर्शन प्रतिष्ठान की कार्यवाह श्रीमती चित्रा फडकेजी भी उपस्थित थी। इस कार्यक्रम में सावरकर दर्शन प्रतिष्ठान के विश्वस्त मा. श्री. विनोद पवार भी उपस्थित थे।

इंटरनेटच्या माध्यमातून वैचारिक सक्रियता

रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी तथा नासिक के अतुल पाटणकर और प्रदिप पेशकार इन दो दोस्तों के सामाजिक संस्था के सम्मिलित प्रयासों से ''इंटरनेट के माध्यम से सामाजिक सक्रियता'' इस विषयपर दि. ६-७ नवंबर, २००९ को नासिक में प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन किया गया इसमें २० प्रतिभागी सम्मिलित हुए थे।

इन दो दिनों में इंटरनेट के माध्यम का उपयोग सामाजिक सक्रियता के लिए कैसे कर सकते हैं, इसका मार्गधर्शन किया गया। ब्लॉग्ज कैसे बनाये, विभिन्न साईटस् का सर्फिंग करके उपयुक्त मालुमात कैसे करे इस विषयों पर मार्गदर्शन डॉ. विनय सहस्त्रबुद्धे, सुनील मिश्रा, मिलिंद थत्ते, मंदार भारदे तथा अतुल पाटणकर इन महानुभवोंने मार्गदर्शन किया।

किसन गोपाल राजपुरिया वानप्रस्थ आश्रम से...

किसन गोपाल राजपुरिया वानप्रस्थम आश्रम में स्थित श्री बालेश्वर शिव ध्यान केंद्र का लाभ आश्रम में रहनेवाले सभी निवासी उठाते हैं। प्रतिदिन सुबह-शाम प्रार्थना होती है। श्री बालेश्वर शिव ध्यान केंद्र की स्थापना श्री अजय अग्रवाल एवं श्री संजय अग्रवाल के परिवार ने की है। प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि के पर्व पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इस माह इस शिवध्यान केंद्र के विकास एवं सजावट का कार्य श्री अजयजी एवं श्री संजयजी अग्रवाल के परिवार द्वारा संपन्न हुआ। वानप्रस्थआश्रम इनका अत्याधिक आभारी है।

इस माह श्री निरंजनलाल भगेरिया द्वारा ५०००/- (पांच हजार नारी वृन्द गृह की महिलाओं द्वारा ४०००/- (चार हजार रुपये) आश्रम को प्राप्त हुए। आश्रम इनका भी आभारी है।

दि. ७.११.०९ को गोपाल गार्डन हाईस्कूल के कक्षा ५,६,७ एवं ८ के विद्यार्थी अपने शिक्षकों के साथ आये और उन्होंने आश्रम को दैनिक उपयोग की सामग्री भेंट दी।

दि. ११.११.०९ को श्री एम.डी. शहा महिला कॉलेज (मालाड) से शिक्षक और विद्यार्थी आश्रम में आये और यहां की गतिविधियों की भूरि भूरि प्रशंसा की।

दि. २४.११.०९ को इस्कान के श्री राधाकांत जी प्रभु का भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम हुआ जिसमें लग सभी निवासियों में भाग लिया।

वानप्रस्थ आश्रम में निवासियों को अच्छी से अच्छी सुविधा प्रदान की जाती है। उन्हें घर जैसा वातावरण मिले, इसकी पूरी कोशिश की जाती है, फिर भी उनके पारिवारिक संबंधि से विशेष निवेदन है कि महीने में कम से कम एक दो बार उन से मिलने अवश्य आवें।

योगेंद्र किसन गोपाल राजपुरिया

सितोपलादि चूर्ण

पैकिंग - ४० ग्राम

मूल्य - रू. २५/-

घटक द्रव्य -

पिप्पली - यह कटु है कफ और स्निग्ध होने से वात का शवन करती है। कफवातशामक होने से कासहर श्वासहर है। क्षयरोग में कीटाणूओं का नाशक है। इससे कफ आसानी से निकलता है।

एला - कफ निस्सारक है। कास श्वास में प्रयुक्त है।

त्वक् - यह श्लेष्महर और यक्ष्मानाशक है। इसलिए कास, श्वास में प्रयुक्त है।

वंशलोचन - कषाय मधुर, मधुरविपाक नभा शीतबीर्य है। कफनिःस्सारक और श्वासहर है। ज्वरघ्न है। कास, श्वास, क्षय और ज्वर में उपयुक्त है।

उपयुक्तता - कफ निःस्सारक होने से गले से कफ हो बाहर निकालता है। खांसी में तथा श्वास में उपयुक्त है। क्षय रोग में विशेष उपयुक्त है।

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था के बहुपयोगी उत्पाद

पिप्पली

Latin Name - Piper Longum

संस्कृत - पिप्पली, मागधी, वैदेही आदि

हिंदी -पीपल, मराठी - पिंपळी

स्वरूप - इसकी लता होती है जो भूमीपर फैलती है या दूसरे वृक्षों के सहरो ऊपर जाती है। पत्र - हृदयाकृती, लट्बाकार या गोलाकार होते हैं।

फल - पिप्पली अम्बी , शुण्डाकार होती है। पकने पर इसका वर्ण रक्त होता है। सुखने पर कृष्णाथ घूस्वरवर्ण हो जाता है।

जाति - राजनिघण्डु में इसकी ४ जाती बतायी गयी है। पिप्पली, गजपिप्पली, सैंइली, वनपिप्पली

गुण - लघु, स्निग्ध उष्ण, रस-कटु, विपाक-मधुर वीर्य-अनुष्णशीत

यह कटु होने से कफ का शमन करता है। दीपन, तृषिघ्न, वातानुकोमन, शूलप्रशमन और मृदुरेपन है। कास, श्वास, हिक्का में उपयुक्त है। अरुचि, अग्निमांद्य, अजीर्ण, गुल्म उदरशूल आदि विकारों में प्रयुक्त किया जाता है।

सामान्य दौर्बल्य में इसका प्रयोग होता है। रसायन कर्म के लिए वर्धमान पिप्पली अधिक लाभकर है।

प्रयोज्यअंग - फल, फूल

विशिष्ट योग - जुड पिप्पली, पिप्पलीखंड, पिप्पल्यासव.

श्लेष्माला मधुराचार्द्रा, गुर्वी स्निग्धा च पिप्पली।

साशुष्का कफवातघ्नी कटुष्ण वृष्यसंमता॥ (च. सू. २७)

ज्ञान प्राप्ति

महर्षि वसिष्ठ ने दशरथ पुत्रों को यज्ञोपतीत प्रद किया था। श्रीराम सहित चारो भाईयों ने इस अवसर पर संकल्प लिया था कि वे धर्ममय जीवन व्यतीत करेंगे। परिस्थितियों का सामना करते हुए जीवन पथ पर अग्रसर होंगे।

यज्ञोपतीत का यही दर्शन है।

बोधकथा

मन चंगा तो कठौती में गंगा

(१)

भक्त रैदास का जीवन प्रामाणिक और पवित्र था। परिवार में भरण पोषण के लिए वे जूते गांठते थे। आय कम होने पर भी उन्हें संतोष बहुत था। जब भी उन्हें समय मिलता वे सत्संगति और प्रभु भक्ति किया करते थे।

एक बार गंगा के किनारे भारी मेला लगा। हजारों व्यक्ति दूर दूर से गंगा स्नान के लिए आ रहे थे इसमें एक पंडित भी था। उसका ज्ञान कम था पर अहंकार बहुत ज्यादा था। उसके जूते मार्ग में चलते चलते फट गये थे। ज्यों ही वह रैदास के गांव से गुजरा उसने रैदास को जूते गांठते हुए देखकर अपने जूते भी ठीक करने को कहा। रैदास जूता ठीक करने लगे और पंडितजी ने खड़े खड़े अपने पाण्डित्य का प्रदर्शन करते हुए गंगा के महत्त्व पर लंबा चौड़ा भाषण सुना दिया और कहा ऐसे मौके पर तुम्हे भी गंगा स्नान कर पवित्र होना चाहिए।

रैदास ने कहा - ''पण्डित जी! इस कार्य के लिए मैं असमर्थ हूं। यदि गंगा-स्नान के लिए जाऊंगा तो पीछे मेरा परिवार भूखा मर जायेगा।'' पंडित जी ने घृणा से मुंह फेरते हुए कहा - ''तुम्हारे जैसे अधम लोग भी इस दुनिया में है जो कभी गंगा-स्नान का पुण्य नहीं कमा सकते।''

पंडित के मिथ्या अहंकार को नष्ट करने के लिए रैदास ने कहा - 'पंडित प्रवर! मैं आपके जूते का पारिश्रमिक नहीं लूंगा। आप मेरा एक छोटा सा कार्य कर देंगे तो बड़ा उपकार होगा।

रैदास ने अपनी जेब से एक सुपारी निकालते हुए कहा - पंडित जी! आप सौभाग्यशाली हैं जो गंगा-स्नान का महान पुण्य कमायेंगे किन्तु मैं अभागा यह पुण्य नहीं कमा सकता। मेरी गंगा-मैया के प्रति गहरी निष्ठा है। अतः मेरी ओर से यह सुपारी आप गंगा मैया को समर्पित कीजिएगा पर शर्त यह है कि यदि माता गंगा स्वयं हाथ फैलाये तो देना अन्यथा नहीं।

पंडित ने रोष भरे स्वर में कहा - 'मूर्ख! आज तक गंगा मैया ने बड़े-बड़े महर्षियों के आगे कभी हाथ नहीं पसारे, क्या वह तेरी सुपारी के लिए हाथ पसारेगी? पण्डित रैदास की मूर्खता पर हँसता हुआ सुपारी लेकर चल दिया और गंगा स्नान से निवृत्ति के पश्चात् हाथ में सुपारी लेकर बोला - ''मैया! हाथ फैलाओ तथा रैदास की सुपारी ग्रहण करो।''

(२)

उसी समय गंगा में एक हाथ बाहर आया और आवाज सुनाई दी - ''भक्त रैदास की सुपारी मुझे दे दो तथा मेरी ओर से यह कंगन उसे दे देना।'' यह दृश्य देखकर पंडितजी की आँखे चकित रह गई।

बहुमूल्य हीरों से जड़ा कंगन देखकर पंडित का मन ललचाया, उसने अपने घर जाने का मार्ग बदल लिया। कंगन लेकर सीधा अपने घर पहुंच गया। उसने सोचा यह कंगन मैं राजा को भेंट कर देता हूं ताकि राज-कृपा से हम सदा सुखी रहेंगे। पंडित ने कंगन राजा को समर्पित करते हुए गंगा का प्रसंग सुनाया तो राजा के आश्चर्य का पार नहीं रहा। राजा ने एक लाख रुपये का पुस्कार देकर पंडित को विदा किया। राजा ने वह कंगन रानी को भेंट किया। समस्त राज परिवार ने कंगन की सराहना करते हुए कहा, यदि ऐसा दूसरा कंगन होता तो जोड़ी कितनी अच्छी लगती। यह बात रानी ने राजा से कही और राजा ने पंडित को बुलाकर इसकी जोड़ी का दूसरा कंगन लाने का आदेश दिया। पंडित के होश गायब हो गये, क्या उत्तर दूं यह उसे समझ में नहीं आया। राजा ने कड़े स्वर में पुनः अपना आदेश दोहराया। पंडित ने विवशता से गंगा की ओर प्रस्थान किया और गंगा ने प्रकट होकर कहा - ''नराधम! तुझे शर्म नहीं आती, तूने कंगन रैदास को नहीं दिया राजा को देकर रुपये भी हजम कर गया। अब भी रूपये लकर रैदास को दे अन्यथा मै तुझे नष्ट कर दूंगी।

मृत्यु से घबराकर पंडित ने रूपये रैदास के सामने रखकर रोते रोते सारी घटना सुना दी। रैदास ने कहा - 'पंडित जी! मैं बिना श्रम का पैसा नहीं लेता अतः आप ही इन्हें ले जाइये!

पंडित ने रोते हुए कहा - मैं तो मारा गया। मेरे पर गंगा मैया रुष्ट है, राजा रुष्ट है और आप भी रुष्ट हो गये। मेरे अपराध क्षमा करो, मेरी रक्षा करो।'' रैदास का दयालु हृदय पंडित के करुण-क्रन्द को सुनकर द्रवित हो गया। वह तुरंत ही चमड़ा भिगाने की कठौती के पानी को गंगा मानकर स्तुति करने लगा। कुछ ही क्षण में गंगा माया हाथ में कंगन लेकर उपस्थित हुई और भक्त को कंगन देकर अन्तर्धान हो गयी। रैदास ने वह कंगन पंडित को दे दिया। पंडित यह सारी प्रक्रिया देखता ही रह गया और उसने भक्त रैदास के चरणों में सिर झुका दिया, जाते जाते पंडित के मुख से शब्द निकले - 'मन चंगा तो कठौती में गंगा।'

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल, युगाब्द ५१११
दिनांक ९, १०, ११ अक्टूबर २००९ राजगृह, नालंदा (बिहार)

प्रस्ताव क्र. २

पर्यावरण पर वैश्विक संकट एवं भारतीय दृष्टि

हजारों वर्षों से संतुलित रूप से चल रहे सृष्टिचक्र में पिछले कुछ दशकों में एकाएक भयावह असंतुलन निर्माण हुआ। दुनिया भर में बढ़ता हुआ भोगवाद, नैसर्गिक संसाधनों का अमर्यादित उपभोग के कारण बढ़ रहे जल संकट, वायु प्रदूषण निरंतर घटते जंगल तथा जैव विविधता इत्यादि समस्याओं के चलते पर्यावरण के समक्ष उपस्थित विकराल वैश्विक संकट पर अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल गंभीर चिंता व्यक्त करता है।

अस्तित्व के लिए संघर्ष तथा प्रकृति का शोषण करनेवाली व्यक्तिकेंद्रित पश्चिमी जीवनदृष्टि के कारण ही सृष्टिचक्र में इस प्रकार का असंतुलन निर्माण हुआ है। इसी जीवन दृष्टि के चलते आज विश्व के कुल कार्बन डायऑक्साइड उत्सर्जन में से आधे से ज्यादा हिस्सा मात्र १६ प्रतिशत जनसंख्या वाले विकसित देशों का है। मात्र ४ प्रतिशत जनसंख्या का अमरीका इसमें २५ प्रतिशत co_2 उत्सर्जन का जिम्मेदार है। इसके कारण जहां २०वीं शताब्दी में वैश्विक तापमान की वृद्धि का प्रमाण ०.७.F से १.४०F तक रहीं; २१वीं शताब्दी में अंत तक यह वृद्धि का प्रमाण २.५०F से लेकर १००F तक बढ़ने की संभावना है। बढ़े हुए वैश्विक तापमान (Global Warning) के परिणामस्वरूप जैंव विविधता का संहार, ओजोन की परत का क्षरण, बढ़ती हुई बीमारियों, ध्रुवीय बर्फ के पिघलने से समुद्र का जलस्तर ०.२-१.५ मीटर तक बढ़ने के परिणामस्वरूप बड़े भूभाग का जलमग्न हो जाना आदि कई संकट के बादल के बादल दुनिया पर छाये हुए हैं।

हमारे देश में भी दोषपूर्ण जीवनशैली एवं व्यवहार के कारण पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। आज भारत में आवश्यक ३३ प्रतिशत जंगल के स्थान पर लगभग २० प्रतिशत जंगल है। भारत में ८० प्रतिशत बीमारियां दूषित जल एवं अस्वच्छता के कारण फैल रही है क्योंकि देश के ७५ प्रतिशत लोग अशुद्ध जल पीने के लिए बाध्य हैं। हर वर्ष देश के आधे जिले अकाल या बाढ से प्रभावित के अनिर्बंध उपयोग से हजारो एकड़ भूमि बंजर का प्रकोप, रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अनिर्बंध उपयोग से हजारो एकड़ भूमि बंजर एवं विषाक्त हो जाना खतरे क घंटी है। प्रमुख शहरों में वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण एवं उद्योगों द्वारा हो रहे जल प्रदूषण से बढ़ती बीमारियों तथा उपयोग करों और फेंक दो (Use & Throw) की पद्धति के कारण प्लास्टिक तथा थर्मोकोल जैसे दूषित कचरे में सतत् वृद्धि का कौ समाधान नजर नही आ रहा है।

पर्यावरण की इन सारी वैश्विक समस्याओं की जड़ जीवन के प्रति देखने के दृष्टिकोन में है। जब तक खण्डित, यांत्रिक वैश्विक दृष्टि में परिवर्तन नहीं होगा तब तक समाधान असंभव है। इस हेतु आवश्यकता है सर्वंकष. एकात्म वैश्विक दृष्टि की तथा 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' (त्याग पूर्ण भोग) के आभार पर व्यवहार की। अ. भा. कार्यकारी मंडल का यह सुनिश्चित मत है कि जीव-मनुष्य व पर्यावरण में एकात्मभाव, पंचमहाभूतों (पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश) के प्रति कृतज्ञता का भाव तथा पृथ्वी का माता के रूप में स्वीकार, जल, जमीन, जंगल एवं जानवर का संरक्षण करनेवाली हिंदू जीवनदृष्टि से ही पर्यावरण एवं सृष्टि चक्र का संतुलन बनाए रखा जा सकता है। वैश्विक स्तर पर भी इस यात का स्वीकार हो रहा है।

अ. भा. का. मं. का मानना है कि समाज एवं नीतिनिर्धारकों द्वारा सकारात्मक पहल भी इसमें आवश्यक है। संविधान के अनुच्छेद ४८A व ५१A ने भी पर्यावरण, जलस्त्रोत व वन्य जीवन के संरक्षण को शासन व नागरिकों का कर्तव्य कहकर इन्हें अनिवार्य बताया है। इश संदर्भ में यही भा एक वास्तविकता है कि जल के प्रमुख स्रोत नदी का प्रवाह बाधित होने से कई प्रकार की पर्यावरण की समस्याएं उत्पन्न होती है।

अपनी परम्परा में नदीपूजा, वृक्षपूजा जैसी पद्धतियां प्रकृति के प्रति एकात्मभाव के व्यवहारिक उदाहरण है। राजस्थान में ३७० साल पूर्व वृक्ष काटने के विरोध में इमरती देवी सहित ३६३ लोगों का बलिदान इसका ज्वलंत साक्ष्य है। स्वतंत्र भारत का चिपको आंदोलन तथा वर्तमान में कर्नाटक में चल रहा वृक्ष लक्ष आंदोलन जैसे पर्यावरण रक्षा के सभी प्रयास अनुकरणीय है।

अ.भा. कार्यकारी मंडल केंद्र व प्रदेश सरकारों से अनुरोध करता है कि

१. देश के जल संसाधन स्त्रोतों की सुरक्षा एवं संवर्द्धन हेतु समुचित प्रबंध किए जाएं।

२. जैविक खाद के उपयोग से जैविक व प्राकृतिक खेती को पुनर्स्थापित करके भूमि संरक्षण किया जाय।

३. हिमालय तथा अन्य पर्वतमालाओं की पर्यावर रक्षा हेतु विशेष योजना बने।

४. विभिन्न प्रकार की वैकल्पिक ऊर्जा व्यवस्था का विकास किया जाए।

५. वायु एवं जल को दूषित करनेवाले उद्योगों पर कड़ाई से कदम उठाएं जाएं तथा गंगा व यमुना जैसी सभी नदियों में व्याप्त प्रदूषण को समाप्त करने के समुचित प्रयास हो।

६. गंगा नदी पर किसी भी योजना का क्रियान्वयन करते समय यह सुनिश्चित किया जाय कि उसका प्रवाह अविरल रहे।

इसी प्रकार पर्यावरण एवं विकास संबंधी सभी विषयों पर सामुदायिक सहभागिता तथा सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन मूल्यों को ध्यान में रखते हुए समुचित नीति बने। साथ ही पर्यावरण संबंधी किसी भी प्रकार की अन्यायपूर्ण एवं अनुचित अंतर्राष्ट्रीय संधि का स्वीकार न करे।

कार्यकारी मंडल स्वयंसेवकों सहित देश के नागरिकों को आवाहन करता है कि इस दिशा में केवल शासन पर निर्भर न रहते हुए जल सुरक्षा प्लास्टिक, बिजली आदि चीजों का न्यूनतन उपयोग, वृक्षारोपण जैसे प्रयासों को स्वयंस्फूर्ति से बढ़ावा देने के साथ ही अपने रीतिरिवाजों से किसी भी प्रकार का प्रदूषण और पर्यावरण असंतुलन उत्पन्न न हो ऐसी सावधानी रखें। देश में पर्यावरण रक्ष हेतु चल रहे सभी सकारात्मक प्रयासों का सहयोग कर स्वयं के आचारण द्वारा इस जनजागरण में अपना योगदान दें।

भारत के प्राचीन विद्यापीठ

(भारत की शिक्षा परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। इस लेखमाला में इस समृद्धिकी एक झलक प्रस्तुत है।)

कांची विद्यापीठ

नालंदा विद्यापीठ के चरित्रवान और ज्ञानसंपन्न आचार्यों ने देश विदेश में घूमकर अपने विद्यापीठ की कीर्ति दूर दूर तक फैलायी थी उस की जानकारी के द्वारा आज हम कह सकते हैं कि प्राचीन समय में शिक्षा जगत वैदिक, बौद्ध और जैनधर्म के अनुयायियों की कटु स्पर्धा से विषाक्त नहीं हुआ था। उस समय देश में एक ही भारतीय संस्कृति का ख्याल अस्तित्व में था। विविध धर्मग्रंथ होने के बावजूद उस पंथ के साधु भिक्षु या आचार्य देश के अलग अलग भागों में भ्रमण करते थे। विचारों का आदान-प्रदान मुक्त रूप से होता रहता था। धर्मप्रचार के लिए परिव्राजक - परिव्राजिका, तापस-तापसी, भिक्षु-भिक्षुणी, योगी-योगिनी विविध स्थानों पर जाते थे तो व्यापार करने के लिए व्यापारी, और शिक्षण प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी सैंकड़ों मील प्रवास करने से घबराते नहीं थे। तक्षशिला के आचार्यों का अयोध्या जाना या अयोध्या के पंडितों का वल्लभी पहुंचना असंभव नहीं माना जाता था। वास्तव में ई.स. की. १२वीं शताब्दी तक समग्र भारत के संस्कृति के सूत्र भारत की तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी और कांची जैसे विद्यापीठों के हाथ में थे ऐसा कह सकते हैं। दक्षिण भारत की अत्यंत प्रभावशाली विद्यापीठों में कांची विद्यापीठ की गणना हो सकती है।

कांची अर्थात् आज का 'कांचीवरम्' का अपभ्रंश (आज की परिभाषा में विकसित) रूप है। हिन्दुस्थान में प्राचीन समय से मान्य सात मोक्षदायिका नगरियों में कांची का समावेश हुआ है। धर्मक्षेत्र होने के साथ साथ कांची विद्याकेंद्र भी था। आज यह शहर दक्षिण रेलवे के चिंगलपेट आर्कोणम मार्ग पर है।

व्याकरण महाभाष्यकार पतंजली ने कांची का उल्लेख किया है। सम्राट अशोक के धर्म-उपदेशकों के कांची तक पहुंचने की जानकारी है।

तामिल काव्य 'मणिमेखलाई में' कांची का उल्लेख है। फाहियान और ह्युऐन

संग ने कांची के गौरव का निर्देश किया है। ह्युएन त्संग कांचीपुर विहार को भारत के प्रख्यात विद्वानों का निवास स्थान कहते हैं। काकुस्थ वर्मा के नालगुंड के स्तंभलेखों में वर्णित पल्लवेंद्रपुरी ही कांची है। ई.स. पूर्व १ली से १३वीं शताब्दी तक बौद्ध तथा जैन इस नगरी को धर्मप्रसार का महत्त्वपूर्ण केंद्र मानते थे। परन्तु इससे पहले कांची में मात्र वैदिकधर्मियों की 'घटिकाऐं' अस्तित्व में होंगी। प्रत्येक घटिका में कोई विद्वान गुरु ज्ञान दान करते थे। इन घटिकाओं को तत्कालीन राजाओं की ओर से जमीन-जागीर मिलती थी और उस पर किसी भी प्रकार का कर वसूल नहीं किया जाता था। इस घटिका का प्राचीन उल्लेख भी ऊपरि निर्दिष्ट काकुस्थवर्मा के नालगुंड के स्तंभलेखों में मिल जाता है। कांची की एक घटिका में मयूर शर्मा ने वेदादि विषयों का शिक्षण लिया था। इस मयूर शर्मा या मौर्य शर्मा के कारण ही आगे चल कर कदंब राजकुल समृद्ध हुआ। ऐसा स्तम्भलेखों में कहा गया है। इस घटिका के शिक्षण का स्तर ऊंचा था ऐसा विविध लेखों में हुए उल्लेखों से जाना जा सकता है। (देखिये Indian culture through Ages, V.S. Venkateshwarn) वाकाटक और गुप्तराजाओं के समय के लगभग अंतिम चरण में बौद्ध धर्म का बहुत प्रचार हुआ और तभी से कांची बौद्ध विद्वानों का आश्रय स्थान बना।

विद्यापीठ के आचार्यो

विद्यापीठ के आचार्यों में नागार्जुन, वात्स्यान, बुद्धघोष, धर्मपाल, दिङ्नाग जैसे दिग्गजों का समावेश होता है। नागार्जुन अर्थात् ई.स. से पूर्व दूसरी शताब्दी के बौद्ध धर्म के प्रख्यात आचार्य। कुल २४ ग्रंथों के लेखक के रूप में उनका उल्लेख चीनी त्रिपिटक में हो चुका है। इस महायान पंथ के विद्वान से रसायनशास्त्र के विषय में भी कार्य किया है। उनका धातु के उपयोगों का निरूपण करनेवाले रसरत्नाकर नाम का ग्रंथ प्रसिद्ध है। नागार्जुन हिन्दुस्थान का एरिस्टोटल कहा जाता है। नागार्जुन कांची से नालंदा गये थे। 'विसुदिमग्ग' नाम के प्रख्यात ग्रंथ के लेखक बुद्धघोष (ई.स. ५वीं शताब्दी) कांची से सिंहलद्वीप गये। चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुए न्यायभाष्य के प्रणेता वात्स्यान इस नगरी के पंडित थे। (इस न्यायभाष्य के टीकाकार के रूप में उद्योतक भी प्रसिद्ध है।) और सुवंधु के बौद्धधर्मीय न्यायशास्त्र विकसित करने का कार्य भी कांची के ही पंडित दिङ्नागने किया। नालंदा की कीर्ति बढ़ाने वाले पंडित धर्मपाल भी कांची के ही थे। कांची के इस विद्वान ने नालंदा में इतनी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी कि ह्युएन त्संग की पंडितों की सूची में उनका नाम प्रथम है। ई.स. की २री शताब्दी से छठी शताब्दी तक प्रत्येक विद्याशाखा में कांची के विद्वानों ने अखिल भारतीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की थी यह स्मरण रखने योग्य है। कांची का मोक्षनगरी के रूप में उल्लेख हो तो इसमें क्या आश्चर्य? बाद के समय में कांची महायानपंथ के तथा विक्रमशीला विहार हीनयान पंथ के विद्वानों का केंद्र माना जाने लगा।

परंतु कांची विद्यापीठ की विशेषता स्थापत्य कला के अध्ययन में रही है। बौद्ध, जैन, हिन्दु और द्रविड इन चारों प्रकार की शिल्पकलाओं के उत्तम नमूने यहां देखने को मिलते है। भव्यता एवं नजाकत ये दोनों गुण यहां मिलते है। कांची के एकाम्बरेश्वर का मंदिर शिल्पकला का एक अनोखा और बेजोड आविष्कार है। कांची की शिल्पकला भारत की सबसे प्राचीन शिल्पकला मानी जाती है। उस पर पल्लव काल की छाप हैं। इसी को द्रविड शिल्पकला भी कहा जाता है। कांची के मंदिर, मामल्लपुरम् के रथ, एक पत्थर या चट्टान से बनाये गये बौद्ध देवालय इस कला का उत्तम नमूना है। तंजावुर का मंदिर भी इनमें से एक है। यह मंदिर १४ मंजिल का है और ऊंचाई १९० फूट है। उसके ऊपर चढ़ाये घुम्मट आधुनिक अभियंताओं को (इन्जीनियरों को) आश्चर्यचकित कर कर देने वाले हैं। पहली से शुरू कर अंतिम सीढ़ी तक नक्काशी का काम किया हुआ है। इतनी कलाकारीगिरी का नाम यहां हो सका उसका वास्तव में कारण यह है कि यह वास्तव में पल्लवेंद्र पुरी अर्थात् गुणवान पल्लवराजाओं के कार्यकाल में समृद्ध व्यापारियों से भरी नगरी थी। उनकी उदार आश्रय के कारण ही इस शिल्पकला की श्रेष्ठ संभाल हो पायी। घर, मंदिर, विहार बांधने की कला का सुनियोजित शिक्षण देने की व्यवस्था ना हो तो स्थापत्यकला का इतना सुदर नमूना किस प्रकार निर्माण हो सकता है? स्थापत्यकाल के कांची के आचार्यो के नाम उपलब्ध नहीं होते इसे हमारे दुर्भाग्य ही मानना चाहिए।

तात्पर्य यह है कि प्रारंभित काल में घटिकाओं में से वैदिक पद्धति का शिक्षण देनेवाले दक्षिण के इस विद्यापीठ में उत्तरकाल में बौद्ध विद्याओं के अध्ययन-अध्यापन के लिए अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त करके और स्थापत्यकला का पद्धतिपूर्वक जतन करके भारत के इतिहास में अपना नाम अविस्मरणीय बनाया उसमें कोई संदेह नहीं है।

साभार – पुनरुत्थान कार्य एवं विचार संदेश

A Boy with a mission

Collection - Pravin Pawar

In 1945, in Bay Robets, Canada, a 12 year old boy saw something in a shop window that set his heart raising, but the price 5 Dollars was far beyond Reuben Earle's means. 5 Dollars would by almost a weeks grocery for his family.

Reuben couldn't ask his father for the money. Everything Mark Earlemade fishing. Reubens mother, Dora streched like elastic to feed and clothe their five children.

However he opened the shops weathered door and went inside standing proud and straight in his flour sack shrit an worn our trousers, he told the shopkeeper what he wanted, adding, "but I don't have the money now. Can you please hold it for me?"

"I, Il try, the Shopkeeper smiled. Reuben respectfully touched his worn cap and walked out. There was a purpose in his lopping stride. Hearing the sound of hammering from the side street he had an idea. He ran yowards the sound and stopped at a construction site. Using nails purchased in burlap sacs well-discarded Reuben knew. He Knew he could sell them back the factory and sold to the man in charge of packing nails. The boy's high tightly clutched the small five cent pieces as he ran the two kilometers home.

Near his house stood the ancient barn that housed the family's goats and chinkens. Reuben found a rusty baking-soda tin and dropped his coins inside. Then he climded into the loft of the barn and hide the can beneath a pile of sweet-smelling hay.

It was supper time when Reuben go to home. when Reuben got home. His father sat at the big kitchen table, working on fishing net. Dora was at the back kitchen range, ready to serve dinner as Reuben took his place at the table.

He looked at his mother and smiled. Sun-light from the window gilded her Shoulder-length bolnd hair. Five foot thin, slim and beautiful, she was the center of the home, the glue that held it together.

Her chores were never-ending. sewing clothes for her family on the old Singer treadle maching, cooking meals and baking bread, planting a vegetable garden, milking the goats and scrubbing soiled clothes on a washboard. But she was happy. Her family and their well-being were her highest priority.

Everyday after chores and school, Reuben scoured the town, collecting the burlap nail bags. On the day the two-room scholhouse closed for the summer, no student was more delighted than Reuben. Now he would have more tume to his mission.

All summer long, despite extra chores at home weeding and watering the garden, cutting wood and fetching water-Reuben kept to his secret task.

Than all too soon the garden was harvested, the vegetables canned and stored, and the school reopened. Soon the leaves fell and the winds blews cold and gusty from the bay. Reuben searching for his burlap treasures.

Often he was cold, tired and hungry, but the thought of the object in the store window sustained him, Sometimes his mother would ask : "Reuben, where were you? We were waiting supper for you."

"Playing, Mum. Sorry."

Dora would look at his face and shake her head. Boys.

Finallly spring brust into glorious green an Reuben' spirit erupted. the time had come! He ran into th barn, climbed to the hayloft and uncovered the tin can. With shaking hands, he poured the coins out and began to count.

Then he counted agin. He needed 20 cents more. Could there be any sacks left anywhere in town? He had to find four and sell them before the day ended.

Reuben hide tin and ran down the street, searchin.

The shadows were lengthening when Reuben arrived at the factory. The sack buyer was about to lock up.

"Mister! please don't close up yet." The man turned and saw Reuben, dirty and sweaat stained.

"Come back tomorrow boy."

"Please, mister. I have to sell the sacks now - please ." the man heard a tremor in Reuben's voice and could tell he was close to tears.

"Why do you need this money so badly?"

It's a secret."

The man took sacks, reached into his pocked and put four nickels into Reubens hand . Reuben murmured a quite thank - you and ran home.

Then, clutching the tin can, he headed for the store.

"I have the money," he solemnly told the owner, pouring his coins onto the counter.

The man went to the window and retrieved Reuben's treasure. He wiped the dust off and gently wrapped it in broun paper. then he placed parcel in Reuben's hand.

Racing home, Reuben brust through the front door. His mother was scrubbing the kitchen range. "Here, Mum ! Here !" Reuben ecxclaimed as he ran to her side. He placed a small box in her work-roughened hand.

She unwrapped it carefully to save the paper. A blue - velvet jewel box appeared. Dora lifted the lid, tears beginning to blur her vision.

In gold lettering on a small, almond shaped brooch was the word Mother.

It was Mother's Day, 1946.

Dora had never received such a gift; she had no finery except her wedding ring. Speechless, she smiled radiently and gathered her son into arms.

सब्जी : स्वास्थ्यवर्द्धक एवं गुणकारी

परवल

रस - मधुर व तिक्त, गुण - लघु, वीर्य - शीत, विपाक - मधुर, प्रभाव -त्रिदोष शामक, रक्तशोधक

औषधीय उपयोग - ज्वर के उपद्रव को शान्त करता है। वमन (उल्टी) के अतिसार में इसके पत्र जो व धनिया का क्वाथ अति लाभकारी है। चर्म रोग में इसके पत्र व नीम के पत्र का क्वाथ से पक्षालन में लाभ होता है। यह सुपाच्य व शरीर को पुष्टि प्रदान करता है। क्षुधावर्धक एवं हृदय तथा मस्तिष्क को बल देता है। उदर के कृमि का नाश करता है।

परवल की दो किस्में होती है। एक मीठा और दूसरा कड़वा। दोनों की अपनी अपनी चिकित्सीय उपयोगिता है।

परवल को धीमे आंचपर पकाकर सूप बनायें उसमें भूना जीरा, कालीमिर्च चूर्ण और नमक स्वादानुसार डालकर पीने से ज्वर (बुखार) की वजह से भूख की कमी और पाचन की कमजोरी को दूर करता है। शरीर को बल प्रदान करता है।

एनीमिया (खून की कमी) में परवल का सूप लाभ प्रदान करता है एवं रक्त के विकार (खराबीः) को दूर करता है।

परवल उच्च रक्तचाप एवं कॉलेस्टरॉल को कम करता है। यह हृदय को मजबूती प्रदान करता है।

खाँसी होने पर परवल को आग में पकाकर चटनी बना कर लेने से लाभ होता है। परवल को सुखाकर चूर्ण करलें उसके बराबर अदरक चूर्ण मिलाकर ३ ग्राम सुबह शाम शहद से लें।

परवल के रूप में अदरक चूर्ण, काली मिर्च चूर्ण और स्वादानुसार नमक लेने से पेट की कृमि का नाश होता है, भूख बढ़ती है, भोजन में रूचि जगती है। साथ ही साथ यह शरीर की कार्यक्षमता बढाता है।

जोड़े के दर्द में परवल की सब्जी, सूप या चटनी खाने से लाभ होता है। कडुवे परवल का सूप प्रयोग में लाने से फोड़ा-फूंसी, चर्म रोग एवं शरीर या हाथ पांव का जलन ठीक होता है।

परवल को सुखाकर चूर्ण बना लें इसे शहद के साथ मिलाकर लेने से सूजन एवं बुखार कम होता है।

पालक

रस : मधुर, कषाय

गुण : रूक्ष

वीर्य : शीत

विपाक : मधुर

प्रभाव : कफ नाशक

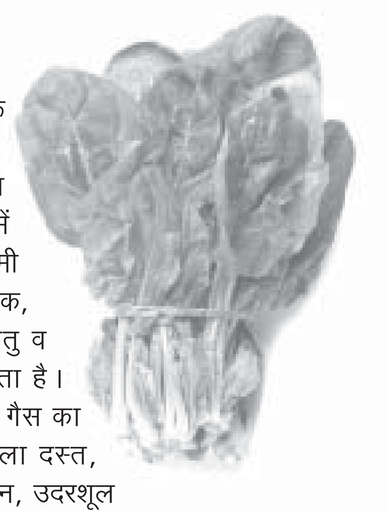

औषधीय उपयोग : रक्त विकार में गुणकारी। रक्त की कमी को दूर करने में सहायक, शरीर में वाधित धातु व लवण को पूरा करता है। ग्रहणी दोष (पेट में गैस का बनना, बराबर पतला दस्त, होना आँव का स्त्रावन, उदरशूल होना) को दूर करता है। यह शरीर को बल प्रदान करता है।

पालक का जूस पचन शक्ति को बढ़ता है। पेट को गैस, जलन, कब्जीयत को दूर करता है।

पालक का सूप शरीर में रक्त को बढ़ाता है। जिस व्यक्ति को रक्त की कमी हो चेहरा सफेद सा हो गया है उसके लिए पालक की सब्जी या सूप काफी लाभदायक है।

गले में जलन, खट्टी डकार, एसीडिटी होने पर पालक का जूस काफी लाभ देता है। यह एक एन्टासीट की तरह काम करता है।

पालक के प्रयोग से हड्डीयाँ मजबूत होती है।

पालक में प्रचूर मात्रा में विटामीन ए पाया जाता है। अतः यह आँखो की ज्योती को बढ़ाता है एवं रतौंधी को दूर करता है।

पालक की कच्ची पत्ती चबाने से पायरिया रोग में लाभ होता है। नाक, मुख या मलद्वार से रक्त आने पर पालक और गाजर का जूस लेने से लाभ होता है।

गर्भवती महिलाओं के लिए यह कैल्शीयम और विटामिन का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। इसके नियमित सेवन से गर्भपात, श्वास की कठिनाई एवं पतले दस्त नहीं होते हैं।

पालक का जूस महिलाओं में दूध को बढ़ाता है।

केशवसृष्टी मुक्त कृषि शिक्षण संस्था

कोकणातील शेती फायद्याची कशी कराल?

प्रस्तावना :

कोकण कृषी विद्यापीठ १८ मे १९७२ सालापासून कृषी क्षेत्रात अत्यंत महत्त्वाची कामगिरी बजावत आहे. कोकणाला लाभलेली समुद्रकिनारपट्टी आणि त्यामुळे सतत वातावरणात-हवामानात होणारा बदल हा प्रत्येक पीकावर वेगळा परिणाम करत असतो. या सर्व गोष्टींचा सखोल अभ्यास करून शेती हा व्यवसाय फायद्याचा कसा करता येईल, यासाठी विविध क्षेत्रात जाती निर्माण करण्यास सुरूवात केली. विशेषतः कोकणात फळपिके, भाजीपाला पिके, भातपिक जास्त प्रमाणात घेतले जाते. या दृष्टिकोनातूनच शेतकरी बांधवांना कोकण कृषी विद्यापीठाने विकसित केलेल्या विविध जातींविषयी माहिती मिळावी आणि सरासरी उत्पादन वाढवण्याचे नवे तंत्र म्हणजेच विकसित जाती यांचा आढावा पुढीलप्रमाणे :

तक्ता :

आपण या सगळ्या माहितीद्वारे विविध फळपीकांच्या, किंवा भाजीपाल्याचा जातींचे उत्पादन घेण्याच्या विचार जरूर करू शकता. या आधुनिक सुधारीत जातींचे वाण वापरल्याने शेतकऱ्याला किंवा नव्याने शेती हा व्यवसाय सुरू करण्याला नक्कीच उपयोग होईल. तसेच, शासनाकडून मिळणाऱ्या अनुदानाचा फायदा घेत शेती व्यवसायाचा चांगल्या रितीने विकास करायला हवा.

अ. क्र.	पीक	विकसित केलेली जात	प्रसारण वर्ष	उत्पादन (क्वि/हेक्टर)	वैशिष्ट्य
१.	आंबा	रत्ना	१९८१	२५०-३०० फळे/झाड	प्रति वर्षी फळ येतात फळांमध्ये साका नाही
		सिंधु	१९९२	२००-२५० फळे/झाड	गराचे प्रमाण अधिक नियमित फळधारणा हापुसचे गुणधर्म
		हापूस	२००२	२५० फळे/झाड	लवकर येणारे, मधुर आस्वाद कापिक गर उत्तम चव व आकर्षक रंग
		कोकण रूची	१९९९	२५० फळे/झाड	लोणच्यासाठी योग्य जात.
२.	काजू	वेगुर्ला - १	१९७४	१५ किग्रॅ/झाड	प्रति किलोमध्ये १६० बिया
		वेगुर्ला - ४	१९८२	१५-२० किग्रॅ/झाड	प्रति किलोमध्ये १४० बिया
		वेगुर्ला - ७	१९९७	१५-२० किग्रॅ/झाड	प्रति किलोमध्ये १०० बिया
		वेगुर्ला - ८	२००२	१५-२० किग्रॅ/झाड	प्रति किलोमध्ये ८५ बिया
३.	नारळ	लक्षद्विप ऑर्डीनरी	१९८६	१५० फळे/झाडे	तेलाचे प्रमाण चांगले
		टी×डी	१९९०	१४० फळे/झाडे	खोबऱ्यासाठी चांगली जात
		प्रताप	१९८८	१५० फळे/झाडे	—''—
		बाणावली	२००२	१२० फळे/झाडे	जास्त उत्पादन देणारी व फळाची प्रत चांगली (मोठी)
		डी×टी	२००३	१४० फळे/झाडे	खोबऱ्यासाठी चांगली
		डी×टी -२	२००८	१२२ फळे/झाडे	खोबऱ्यासाठी चांगली
		फिलीपिन्स ऑर्डिनरी	१९९६	१५० फळे/झाडे	मोठा नारळॉ
४.	सुपारी	श्रीवर्धनी	१९९८	२.५ किग्रॅ/झाड	गुणवत्ता चांगली
५.	कोकम	कोकण आश्विनी	१९९७	१३५ किलो/झाड	फळाचे सरासरी वजन ३४ ग्रॅम
		कोकण हातिस	२००६	२५० किग्रॅ/झाड	फळाचे सरासरी वजन ९१ ग्रॅम

६.	जांभुळ	कोकण बहाडोली	२००४	१२५-५५० किलो/झाड	मोठ्या आकाराची फळे, जास्त टिकवण क्षमता, रसाचे प्रमाण अधिक
७.	फणस	कोकण प्रॉलिफिक	२००४	४५०-५०० किलो/झाड	मोठ्या आकाराची फळे, पावसाळ्यातही गर-चांगला रहातो.
८.	केळी	कोकण सफेद वेलची	२००८	२५ टन/हेक्टर	गर पांढरा, मधुर व उत्तम चव फळे ६ ते ८ दिवस टिकतात. घडाचे वजन १२ ते १३ किलो.
९.	करवंद	कोकण बोल्ड	२००४	३-४ किलो प्रति झाड	लवकर येणारी, अधिक उत्पन्न आकर्षण काळ्या रंगाची फळे
१०.	लिंबू	कोकण लेमन	२००७	२३० फळे/झाड	फळाचे वजन १०० ग्रॅम, रसाचे प्रमाण ३२% बी विरहीत फळे वर्षभर फळे येतात.
११.	काकडी	शीतल	१९८४	२०-२५ टन/हेक्टर	फळांचा रंग, पांढरा, फळे लागवडीपासून ९५-१०५ दिवसात तयार होते.
१२.	घेवडा	कोकण भुषण	१९८९	८ ते १० टन	फळे लागवडीपासून १००-११५ दिवसात काढणीस तयार होते.
१३.	मिरची	कोकण कीर्ती	१९८९	१० टन/हेक्टर (हिरवी मिरची)	पीक १२०-१८० दिवसांनी काढणीस तयार होते.
१४.	टोमॅटो	सोनाली	१९८६	२५-४० टन प्रति/हेक्टर	फळे लागवडीपासून १०० दिवसात काढणीस तयार होतात.
१५.	पडवळ	कोकण श्वेता	१९९२	१५-२० टन प्रति हेक्टर	फळांना, सौम्य, मंद स्वाद खरीप व उन्हाळी हंगामासाठी योग्य लांब, पांढरी फळे
१६.	कारली	कोकण तारा	१९९३	१२-१५ टन प्रति हेक्टर	गडद हिरवा रंग, टिकाऊ फळे, निर्यातीस उपयुक्त खरी तसेच रब्बी हंगामात लागवडीस योग्य ६०-६५ दिवसात काढणी करता येते.
१७.	माठ	कोकण दुरंगी	२००२	२०-२५ टन प्रति हेक्टर	पानाचा पृष्टभाग हिरवा रंगाचा व पानाची मागील बाजू तांबूस रंगाची रुंद पाने, देठाकडे तांबूस
१८.	दोडकी	कोकण हरिता	१९९३	१५ ते २० टन हेक्टर	सरळ लांब टिकाऊ फळे आणि घट्ट गर, खरीप तसेच रब्बी हंगामात लागवडीस योग्य.
१९.	शेवगा	कोकण रुचिरा	१९९२	३०-३५ प्रति झाड	शेवगा गर्द हिरव्या रंगाच्या मध्यम लांब, उत्कृष्ट चव
२०.	अळू	कोकण हरितपर्णी	२०००	३ ते ४ टन प्रति हेक्टर अळू कंद ४ ते ५ टन प्रति हेक्टर हिरवे पर्ण	अधिक उत्पादन व गर्द हिरव्या रंगाची पाने
२१.	रताळी	कोकण आश्विनी	२००० प्रति हेक्टर	१९-२० टन कंद	कमी कालावधी, लालसर लंब व गोलाकार
२२.	वाली	कोकण वाली	२०००	६-७ टन प्रति हेक्टरी	शेंगाची लांबी ३५ ते ४० सेंमी.
२३.	दालचिनी	कोकण तेज	१९९३	२५०-३०० ग्रॅम प्रति झाड असोली किंवा तासून ८० ग्रॅम	सालीचा उत्कृष्ठ वास व चव तेलामध्ये युजेनॉलचे प्रमाण ६.९३% पानाचे उत्पादन ३.५६ किलो/झाड
२४.	जायफळ	कोकण सुगंधा	१९९८	५०० फळे/झाड	दरवर्षी फळधारणा
		कोकण स्वाद	२००३	७२५ फळे/झाड	मादीझाड नगर झाड आवश्यक
		कोकण श्रीमंती	२००५	९०० फळे/झाड	उत्तम दर्जा व अधिक उत्पन्न
२५.	तेजपत्ता	कोकण तेजपत्ता	२००८	७.५ टन/हेक्टर	पानासाठी (तेजपत्ता) आणि पानातील सुगंधी तेल (२.८%) उत्तम, पानातील तेलात युजेनॉलचे प्रमाण ८०.३०%

केशव सृष्टी
सहल भ्रमण के लिए
अत्यंत
रमणीय स्थान
मुंबई से केवल ४० कि.मी. की
दूरी पर भाईंदर के समुद्री
किनारे पर नयनाभिराम पर्वत
श्रृंखला के मध्य स्थित है
केशवसृष्टि!
पानी के झरने
विविधप्रकार के फलों, औषधियों एवं
शोभायमान वृक्षों से संपन्न ऐसी वृक्षवल्लरी
समुद्र किनारे
छोटी छोटी पर्वत श्रृंखलाएं
स्वच्छ एवं आरोग्यदायक
व मन को आल्हादित
कर देनेवाला वातावरण
महानगर के बहुत पास परंतु
प्रदूषण से बहुत दूर ऐसी केशवसृष्टि
शैक्षणिक दृष्टि से विद्यार्थियों के
लिए भी उपयोगी स्थल
इसके अतिरिक्त:
बालोद्यान, तरण तलाव,
नारियल बाग, आम्रवन,
दत्त मंदिर, विद्याप्रद, हनुमान
मंदिर, आवासीय विद्यालय,
कृषि विद्यालय, वनौषधी
संशोधन केंद्र, गौशाला,
वानप्रस्थाश्रम.
संपर्क: केशव सृष्टी, उत्तन-भाईन्दर (प.), जि. ठाणे - ४०१ १०६. फोन : ०२२-२८४५०२४७ / २८४५ ०८६२

Regn. No. MH/MR/Thane (W) 06/2008-09.

RN-72232/99

संस्कृति-विकास दर्शन! प्रकृति की गोद में....

केशवसृष्टि महोत्सव

८, ९, १०
जनवरी २०१०

• स्थान •
केशवसृष्टि,
उत्तन, भाईदर (प.)

भारतीय संस्कृति, कला-क्रीडा, शिक्षा और विज्ञान का अनुठा संगम

विविध आयोजन

- भारत का सांस्कृतिक परिदृष्य
- विविध सांस्कृतिक आयोजन
- विज्ञान प्रदर्शिनी
- व्यवसाय मार्गदर्शन
- कृषि महोत्सव
- मॅरेथॉन
- क्रीडा स्पर्धाएं
- मेडिकल कॅम्प
- गोपूजन एवम् गोप्रदर्शनी
-

आप भी अपने मित्र परिवार सहित महोत्सव के सहभागी बने ।

प्रेषक :
केशवसृष्टि, उत्तन, भायंदर, ठाणे - ४०११०६
दूरभाष : २८४५०२४७, २८४५२८५५

प्रति,

यह पत्रिका मुद्रक एवं प्रकाशक सुरेश भगेरिया द्वारा केशवसृष्टि के लिए युनिटी आर्ट ऑफसेट, ३०२, वडाला उद्योग भवन, वडाला, मुंबई - ४०० ०३१ से मुद्रित और केशवसृष्टि, उत्तन, भायंदर, जि. ठाणे से प्रकाशित हुई है. - संपादक : सत्यदेव बंका